No. of Printed Pages : 3

BSKE–141

स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

बी.एस.के.ई-141 : आयुर्वेद के मूल आधार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल* **दो** *खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. अधोलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5×15=75

   (क) आयुर्वेद अवतरण पर प्रकाश डालिए।

   (ख) बृहत्त्रयी संहिताओं का उनके आचार्यों सहित वर्णन कीजिए।

(ग) लघुत्रयी संहिताओं का उनके आचार्यों सहित वर्णन कीजिए।

(घ) आयुर्वेद में वर्णित प्रत्येक ऋतुओं के आहार–विहार पर प्रकाश डालिए।

(ङ) आयुर्वेद में वर्णित स्वास्थ्य के मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

(च) आयुर्वेद में रोगों के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।

खण्ड—ख

2. (अ) निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : $3\times5=15$

(क) चिकित्सा की परिभाषा

(ख) चिकित्सा का उद्देश्य

(ग) परिचारक के गुण

(घ) रोगी के गुण

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** की ससंदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10

भृगुवै वारुणिः वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मोति। तस्या एतन्प्रोवाच। अन्नं प्राणं चक्षुः क्षोत्रं मनो वाचमिति। हं होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते

येन जीवन्ति। यन्प्रयन्व्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यव स तपस्ताप्त्वा।

अथवा

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्। विज्ञानद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवन्ति। विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तं होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

× × × × ×